आद्विका सिंह

नटखट

एक दिन जब मैंने शरारत करी कि मैं अपने भाई और पिताजी के साथ घर में छुपन-छुपाई खेल रही थी। हम सभी बारी-बारी से छुप रहे थे और एक-दूसरे को ढूंढ रहे थे। मेरी और मेरे भाई की छुपने की बारी आई। हमदोनों एक कमरे में कुंडी लगाकर छुप गए। बाद में कुंडी नहीं खुली। फिर भाई ने किसी तरह कुंडी खोली।